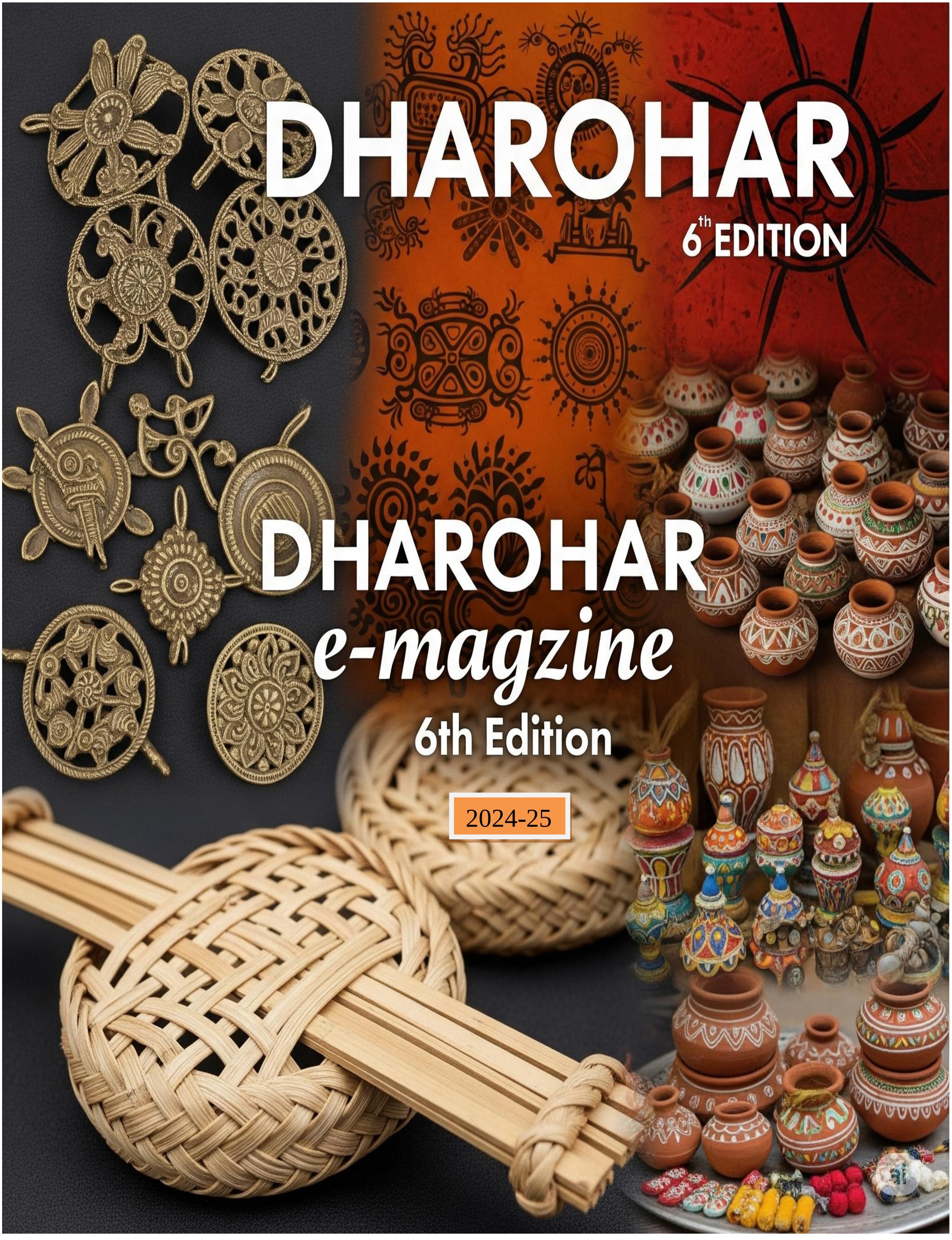

DHAROHAR

6th EDITION

DHAROHAR

e-magzine

6th Edition

2024-25

महाविद्यालय परिवार

1. **प्रशासनिक**
    - डॉ. एस. के. यादव (प्राचार्य)
2. **शैक्षणिक स्टाफ:**
    - डॉ. एस. के. त्रिपाठी (अंग्रेजी)
    - डॉ. एस. आर. महेंद्र (राजनीति शास्त्र))
    - डॉ. तारणीश गौतम (हिंदी)
    - डॉ. आशीष तिवारी(रसायनशास्त्र)
    - डॉ. श्वेता जैन (समाजशास्त्र)
    - सुश्री मीरा टंडन (वाणिज्य)
    - श्रीमती संतोषी उराँव (भूगोल)
    - श्रीमती चांदनी छाबड़ा (गणित)
    - श्रीमती लक्ष्मी गौरी कुजूर सुमन (वनस्पति शास्त्र)
    - श्री आर. एस. विश्वकर्मा (राजनीति शास्त्र)
    - श्री विक्रम सिंह आज़ाद (अंग्रेजी)
    - सुश्री तारिका नाईक (प्राणी शास्त्र)
    - श्री सुर्यकांत सिंह जयदेव(भौतिक शास्त्र)
    - सुश्री अंकिता करभाल (वाणिज्य)
    - श्री कमल किशोर साहू (पीजीडीसीए)
    - श्री कमलेश साहू (प्रयोगशाला तकनीशियन)
3. **कार्यालयीन स्टाफ:**
    - श्री एस. के. सिदार (सहायक वर्ग 2)
    - श्री आर. एस. मरावी
    - श्री दिनेश कुमार ध्रुव
    - श्री मनोज जांगडे
    - श्री ओमप्रकाश खन्ना (कंप्यूटर ऑपरेटर)
    - श्री सत्यम खरे
4. **सहायक स्टाफ (पं. सुंदरलाल शर्मा विश्वविद्यालय संबंधित):**
    - श्री शरद श्रीवास (पं. सुंदरलाल शर्मा वि.वि. सहायक)
    - श्री विपिन चंदेल (पं. सुंदरलाल शर्मा वि.वि. सहायक)

प्राचार्य की ओर से

प्रिय विद्यार्थियों, शिक्षकों और शुभचिंतकों,

यह मेरे लिए अत्यंत **प्रसन्नता का क्षण** है कि डॉ. भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय, पामगढ़, जांजगीर-चांपा (छ.ग.) की वार्षिक पत्रिका **'धरोहर' का छठा संस्करण** आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह अंक एक बार फिर हमारे **कर्मठ शिक्षकों** और **मेधावी छात्र-छात्राओं** की **असाधारण रचनात्मकता और गहन बौद्धिक क्षमता** का जीवंत प्रमाण है।

'धरोहर' महज अक्षरों का एक संग्रह नहीं, बल्कि हमारी **समृद्ध भारतीय सभ्यता और सांस्कृतिक विरासत**का एक चलता-फिरता आईना है। इस विशेष अंक में भी आपको छत्तीसगढ़ की पावन धरा की महक और **यहां की विशिष्ट संस्कृति का गौरव** हर पन्ने पर महसूस होगा। हमें यह घोषणा करते हुए अपार **गर्व की अनुभूति** हो रही है कि हाल ही में राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा हमारे महाविद्यालय को **'बी' ग्रेड (२.२२ अंक) से नवाजा गया है।** यह महत्वपूर्ण उपलब्धि हमारे **शैक्षणिक उत्कृष्टता** के साथ-साथ **पाठ्येतर गतिविधियों** जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक आयोजन, एनएसएस और रेडक्रॉस में किए गए हमारे **व्यापक प्रयासों का भी सटीक मूल्यांकन** है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि हम समग्र विकास के मार्ग पर निरंतर अग्रसर हैं।

यह सराहनीय सफलता **छत्तीसगढ़ शासन के उच्च शिक्षा विभाग, हमारे आदरणीय जनप्रतिनिधियों, जनभागीदारी समिति और सभी सम्मानित नागरिकों के निरंतर समर्थन और सहभागिता**का सुखद परिणाम है। हम दृढ़ संकल्पित हैं कि इसी उत्साह और समर्पण के साथ भविष्य में भी शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान

स्थापित करते रहेंगे।

Dr. S. K. Yadav

Principal

संपादक की कलम से

कॉलेज पत्रिका **"धरोहर 2025"** के मुख्य संपादक के रूप में आप सभी का अभिवादन करना मेरे लिए अत्यंत **गौरवपूर्ण और सौभाग्यशाली** क्षण है। यह पत्रिका मात्र एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए अपनी रचनात्मकता, मौलिक विचारों और लेखन कौशल को प्रदर्शित करने का एक जीवंत मंच है। यह हमारे महाविद्यालय की **समग्र गतिविधियों और बहुआयामी उपलब्धियों** का भी एक उत्कृष्ट प्रतिबिंब है।

" धरोहर " का प्रत्येक अंक हमारे छात्रों की **बहुमुखी प्रतिभा और विचारों की विविधता** को दर्शाता है। इसमें कविताएं, लघुकथाएं, गहन निबंध, कलाकृतियां और अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियां शामिल हैं, जो हमारे छात्रों की **कल्पनाशीलता, बुद्धिमत्ता और भावनाओं** को उजागर करती हैं। यह पत्रिका न केवल छात्रों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान करती है, बल्कि उन्हें अपने **लेखन और संपादकीय कौशल** को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

"धरोहर 2025" में, हमने विशेष रूप से हमारे महाविद्यालय के शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक क्षेत्रों में हुई **महत्वपूर्ण उपलब्धियों** पर ध्यान केंद्रित किया है। इसमें हमारे छात्रों द्वारा हासिल किए गए विभिन्न पुरस्कारों, प्रतियोगिताओं और अन्य गतिविधियों का विस्तृत विवरण शामिल है। यह पत्रिका यह भी दर्शाती है कि कैसे हमारा महाविद्यालय अपने छात्रों को **समग्र विकास** के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें **नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक जिम्मेदारी की भावना** विकसित करने में सहायता करता है।

मैं इस अद्भुत पत्रिका को साकार करने में योगदान देने वाले सभी लोगों का **हृदय से धन्यवाद** करना चाहता हूँ। मैं हमारे **आदरणीय प्राचार्य** महोदय का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे यह महत्वपूर्ण दायित्व संभालने का अवसर प्रदान किया। मैं संपादकीय मंडल के सदस्यों और सभी छात्र लेखकों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं और कड़ी मेहनत से इस पत्रिका को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप **"धरोहर 2025"** को पढ़ने और इसमें शामिल विभिन्न रचनाओं का आनंद लेंगे। यह पत्रिका न केवल हमारे महाविद्यालय की **जीवंत संस्कृति और गतिविधियों** की एक झलक प्रदान करती है, बल्कि यह हमारे छात्रों की **असीमित प्रतिभा और क्षमता** का भी एक सशक्त प्रमाण है।

धन्यवाद।

Dr. Ashish Tiwari
Editor

THE TEAM

PATRON

Dr. S. K. YADAV

CHIEF EDITOR

Dr. Ashish Tiwari (IQAC COORDINATOR)

EDITORS –

Dr. S. K. Tripathi(English)

Dr. S.R. Mahendra(Political Science)

Dr. Tarnish Gautam (Hindi)

Ms. Mira Tandon (Commerce)

STUDENT EDITOR

Somesh Shriwas M . A IV SEM (POL. SCI.)

एन.एस.एस. का नारा

एन.एस.एस. के मार्ग में चलते रहे हम
न रुके, न थके, न लड़खड़ाए कदम |
कंधे से कंधे मिलाकर चले हम
न कोई भाषा, न कोई जाति रहे सब एक मन |
मन में हो विश्वास, मंजिल पाने की,
बातों से नहीं अब समय है कुछ कर दिखाने की |
एन.एस.एस. का नारा है, स्वच्छ भारत हमारा है |
ये धरती हमारी है ये सारा जहां भी हमारा है |
व्यक्तित्व विकास की बातें एन.एस.एस. से हमने सीखा है |
देश प्रेम, समाज विकास, एन.एस.एस. के पन्नों में लिखा है |
उठे समाज के लिए एन.एस.एस. ने हमें बताया
जगे स्वराज्य के लिए एन.एस.एस. ने हमें सिखाया |
एन.एस.एस. से मिलती है ज्ञान व सम्मान
एन.एस.एस. ही मेरे लिए सब कुछ है
जिसने कराया मुझे अपनों से पहचान |
जिसने कराया मुझे अपनों से पहचान |

डॉ. एस. आर. महेन्द्र
कार्यक्रम अधिकारी
डॉ. भीमराव अंबेडकर शास. महाविद्यालय
पामगढ़
जिला - जांजगीर-चांपा

प्राचीन भारतीय ग्रंथ और कॉस्मेटिक रसायन विज्ञान

भारत में सौंदर्य प्रसाधन (कॉस्मेटिक्स) और व्यक्तिगत देखभाल की परंपरा प्राचीन साहित्य और आध्यात्मिक दर्शन में गहराई से निहित है। वेद, जिन्हें इंडो-आर्यन सभ्यता के शुरुआती साहित्यिक अभिलेखों के रूप में पूजा जाता है, ब्रह्मांड विज्ञान, दर्शनशास्त्र, अनुष्ठानों और दैनिक जीवन तक फैले ज्ञान का एक विशाल भंडार समेटे हुए हैं।

इन प्राचीन ग्रंथों में व्यक्तिगत देखभाल और सौंदर्यीकरण की प्रथाओं की दिलचस्प झलक मिलती है। वैदिक काल में मनुष्यों और प्रकृति के बीच घनिष्ठ संबंध, जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे स्वच्छता बनाए रखने, स्वरूप निखारने और धार्मिक समारोहों में भाग लेने के लिए आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में परिलक्षित होता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद से लेकर चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और रसशास्त्र ग्रंथों तक, सौंदर्य, स्वच्छता और आत्म-देखभाल के संदर्भ प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ये रचनाएँ न केवल शारीरिक सौंदर्य पर जोर देती हैं बल्कि सौंदर्य को स्वास्थ्य, पवित्रता और आध्यात्मिक कल्याण से भी जोड़ती हैं।

इन ग्रंथों में रसायन विज्ञान और सौंदर्य प्रसाधन का मेल सामग्री के चयन, शुद्धिकरण, मिश्रण और अनुप्रयोग तकनीकों के विस्तृत विवरण में स्पष्ट है - जिनमें से कई आज के हर्बल और खनिज-आधारित सौंदर्य प्रसाधनों में भी गूँजते हैं। यह लेख इन प्रथाओं के शुरुआती संदर्भों को उजागर करने के लिए ऋग्वेद और अथर्ववेद में गहराई से उतरता है, जो भारत में व्यक्तिगत देखभाल परंपराओं की प्राचीन जड़ों पर प्रकाश डालता है।

वैदिक और उपनिषदिक संदर्भ

- **ऋग्वेद और अथर्ववेद:**
  - सुगंधित तेलों (जैसे चंदन, तिल), हर्बल पेस्ट (हल्दी, केसर), और प्राकृतिक रंगों (मेहंदी, नील) के उपयोग का उल्लेख सौंदर्यीकरण और अनुष्ठानिक शुद्धिकरण के लिए करते हैं।
  - उबटन (हर्बल बॉडी स्क्रब) का वर्णन करते हैं, जो आज भी भारतीय शादियों में सफाई और चमकदार त्वचा के लिए उपयोग किया जाता है।
  - काजल (कोल्लीरियम) का उपयोग आँखों को सजाने के लिए, जो दीपक की कालिख, घी और हर्बल अर्क से बनाया जाता था।
- **उपनिषद:**
  - दार्शनिक ग्रंथ जो आंतरिक पवित्रता के महत्व पर जोर देते हैं, लेकिन बाहरी स्वच्छता और सुगंधित पदार्थों के उपयोग का भी संदर्भ देते हैं।

आयुर्वेद और रसशास्त्र

- **चरक संहिता और सुश्रुत संहिता:**
  - फेस मास्क, त्वचा को हल्का करने वाले एजेंट, एंटी-एजिंग तैयारी और बालों के टॉनिक के लिए विस्तृत व्यंजन।
  - त्वचा के स्वास्थ्य और रंग को निखारने के लिए हर्बल काढ़ा (जैसे नीम, आंवला, मुलेठी) का उपयोग।
  - भस्म (कैल्सीनित धातु/खनिज की राख) का उपयोग त्वचा की स्थितियों और कॉस्मेटिक पिगमेंट के रूप में बहुत कम मात्रा में।
- **रसशास्त्र ग्रंथ (जैसे रसरत्न समुच्चय):**
  - सुरक्षित कॉस्मेटिक उपयोग के लिए धातुओं और खनिजों के शुद्धिकरण (शोधन) और भस्मीकरण (मारण) की प्रक्रियाएँ।
  - आसवन, मैसरेशन और मिश्रण का उपयोग करके प्राकृतिक इत्र (गंध), सुगंधित तेल और रंगीन पाउडर तैयार करना।

पुराण और बाद के ग्रंथ

- **अग्नि पुराण और गरुड़ पुराण:**
    - सुगंधित जल, धूप और कॉस्मेटिक पेस्ट बनाने के निर्देश।
    - बालों के रंगों (नील, लोहे के बुरादे और हर्बल अर्क का उपयोग करके) और होंठ/गाल के रंगों (चुकंदर, कुसुम का उपयोग करके) के लिए व्यंजन।
    -

वैज्ञानिक आधार और आधुनिक प्रासंगिकता

- **सूक्ष्मजीव रोधी और एंटीऑक्सीडेंट गुण:**कई सामग्रियों (जैसे हल्दी, नीम, चंदन) में सिद्ध सूक्ष्मजीव रोधी, सूजन रोधी और एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव होते हैं।
- **प्राकृतिक पिगमेंट और सनस्क्रीन:**खनिजों और पौधों के अर्क का उपयोग सुरक्षित, बायोडिग्रेडेबल रंग और यूवी संरक्षक के रूप में।
- **समग्र दृष्टिकोण:** सौंदर्य, स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण का एकीकरण, वेलनेस कॉस्मेटिक्स में आधुनिक प्रवृत्तियों का अनुमान लगाना।
- ## प्राचीन और आधुनिक कॉस्मेटिक विज्ञान
- **स्थिरता:** प्राचीन भारतीय सौंदर्य प्रसाधन नवीकरणीय, बायोडिग्रेडेबल सामग्री और पर्यावरण के अनुकूल प्रक्रियाओं पर निर्भर थे।
- **सुरक्षा और प्रभावकारिता:**शुद्धिकरण और विषहरण तकनीकों ने उत्पाद सुरक्षा सुनिश्चित की, एक चिंता जो आधुनिक नियामक मानकों में भी प्रतिध्वनित होती है।
- **नवाचार क्षमता:** प्राचीन व्यंजनों को फिर से खोजना और वैज्ञानिक रूप से मान्य करना नए प्राकृतिक और हरे सौंदर्य उत्पादों को प्रेरित कर सकता है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथ कॉस्मेटिक रसायन विज्ञान की एक समृद्ध विरासत प्रस्तुत करते हैं।। वनस्पतियों, खनिजों और शुद्धिकरण तकनीकों का परिष्कृत उपयोग आधुनिक कॉस्मेटिक विज्ञान के कई सिद्धांतों का अनुमान लगाता है। इन पारंपरिक योगों के व्यवस्थित अनुसंधान और सत्यापन भविष्य के लिए सुरक्षित, टिकाऊ और प्रभावी सौंदर्य प्रसाधनों के विकास में योगदान कर सकते हैं।

Dr. Ashish Tiwari
Assistant Prof. (Chemistry)
Govt. College Pamgarh (C.G.)

आशा की एक किरण

सौभाग्यवश मिला मानव जीवन विभिन्न उलझनों, संकटों एवं कठिनाइयों से घिरा होता है, जब सभी रास्ते दुर्गम एवं अंधियारों से भरे दीखते हो, विषम परिस्थितियों से डरकर मनो भावनाएं भी बचने का प्रयास करती हो, जब अपनों का पर्याप्त सकारात्मक सहयोग नहीं मिलता हो, आर्थिक परिस्थितियाँ स्वतः अलग कमजोर करती हो, हौसला भी जब कमजोर होने लगता हो, सामाजिक ताने तथा करीबियों के चुटीले व्यंग्य जब मन को झकझोरने लगते है। चहुँओर निराशा एवं हताशा के ऐसे वातावरण में रहकर जीना दूभर होने लगता है। आत्मविश्वास भी जब डगमगाने लगता है और दैवीय शक्ति भी कठिन परीक्षा लेने लगती है तब ऐसे हताश, निराश एवं परेशानी के वक्त में आत्मप्रेरित आशा ही सभी प्राणियों को सन्मार्ग दिखाकर प्रगति का पथ प्रशस्त करती है। यह मानव शक्ति को जागृत एवं विकसित करती है इसलिये आशा का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। जिसने अपने जीवन की आशा को छोड़ दिया वह आधी लड़ाई स्वतः हार जाता है। मार्टिन लूथर किंग द्वितीय ने कहा था "अगर तुम उड़ नहीं सकते तो दौड़ो, अगर तुम दौड़ नहीं सकते तो चलो, अगर तुम चल भी नहीं सकते तो रेंगो, पर कुछ न कुछ करके आगे बढ़ते रहने की सकारात्मक सोच हमेशा रखो।क्योंकि जीवन का प्रासाद आशा की नींवपर ही खड़ा हुआ है।"

हार मत मानो कि मंजिल बहुत दूर है,नजरिया सही होगा तो बात समझ आयेगी। पहला कदम उठाने का साहस तो करो, तुम्हारी मंजिल तुम्हें पास नजर आएगी।
रास्ते में कंकड़ ही कंकड़ हो तो भी एक अच्छा जूता पहनकर उसपर चला जा सकता है। लेकिन यदि जूते के अंदर एक भी कंकड़ आ गया तो कुछ कदम चलना भी मुश्किल होता है। अर्थात बाहर की इन कठिन से कठिन चुनौतियों से हम अपने अंदर की मजबूत इच्छाशक्ति से मुकाबला करके उसे परास्त कर सकते है। अर्थात आशा की एक किरण से ही जीवन में शक्ति व सामर्थ्य मिलता है, जिसके बल पर जीवन का कठिन से कठिन समय भी चुटकियों में बीत जाता है और जीवन चमक उठता है।

जो हर तूफां से बचा ले उसे पाश कहते है। जो हर निराशा से बचा ले उसे आश कहते है। तमस का सीना चीरने के लिए एक किरण काफी है। बड़ा मजबूत है वो धागा जिसे विश्वास कहते है।

कहते है अच्छा और सुखमय जीवन जीने के लिए आशा का होना बहुत जरूरी होता है इससे जीवन को बल, सम्बल, ताकत और प्रेरणा मिलती है और हर्षोल्लास के सोपान भी तय होते है। अर्थात आशा की एक किरण एक ईश्वरीय वरदान है जो हमारी शक्ति को पल्लवित, पुष्पित एवं विकसित करती है। मानव जीवन को सफल, सुखी और समृद्धशाली बनाती है। एक रोगी को स्वास्थ्य लाभ दिलाती है बुरे से बुरे वक्त को भी बिताकर अच्छा समय लाती है। निराशा के वातावरण को आशा ही जागृत व जीवित करती है। आशा की बात पर मुझे एक कहानी याद आ गई रात के समय एक कमरे में चार मोमबत्तियां जल रही थी चारों तरफ सन्नाटा था एकांत समय पाकर मोमबत्तियां एक दूसरे से अपने-अपने दिल की बाते करने लगी। पहली मोमबत्ती बोली "मैं शांति की प्रतीक हूँ।" पर अब मुझे लगता है कि इस दुनियाँ को मेरी जरूरत अब नहीं है हर तरफ आपा-धापी और लूटमार मची हुई है मैं यहाँ से ऊब चुकी हूँ अब और देरतक यहाँ नहीं रह सकूँगी और ऐसा कहते हुए कुछ देर में वो मोमबत्ती बुझ गई। तब दूसरी मोमबत्ती बोली "मैं विश्वास की प्रतीक हूँ।" और मुझे लगता है झूठ और फ़रेब के बीच मेरी भी यहाँ कोई ज्यादा जरूरत नहीं है अब मैं भी यहाँ से जा रही हूँ और यह कहते हुए दूसरी मोमबत्ती भी कुछ देर में बुझ गई। तीसरी मोमबत्ती भी दुखी होते हुए बोली "मैं प्रेम की प्रतीक हूँ।" मेरे पास जलते रहने की ताकत तो है पर आज हर कोई इतना व्यस्त हो गया है कि मेरे लिए किसी के पास वक्त ही नहीं

रहा, दूसरों से तो दूर की बात है लोग अपनों से भी प्रेम करना भूलते जा रहे है अब मैं ये और नहीं सह सकती इसलिए मैं भी जा रही हूँ और ऐसा कहते हुए तीसरी मोमबत्ती भी बुझ गई। उसके बुझते ही एक मासूम बच्चा उस कमरे में दाखिल हुआ, मोमबत्तियों को बुझे हुए देखकर वह घबरा गया उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे और वह रुआंसा होकर बोला अरी मोमबत्तियों तुम जल क्यों नहीं रही, तुम्हें तो अंत तक जलना चाहिए तुम इसतरह बीच में कैसे बूझ गई? तभी चौथी मोमबत्ती बोली प्यारे बच्चे घबराओ नहीं मैं आशा की एक किरण हूँ और जब तक मैं जल रही हूँ तुम बाकी मोमबत्तियों को फिर से जला सकते हो, यह सुनकर बच्चा खुश हो गया और उसने आशा की किरण के बल पर शान्ति, विश्वास और प्रेम को फिर से प्रकाशित कर दिया। कहने का आशय यह है कि आशा की किरण एक प्राणतत्व है आशा ही जीवन है यह गति, स्फूर्ति, चेतना और ओज है। उज्ज्वल भविष्य के लिए एक प्रेरणा है जब सब कुछ बुरा होते दिखने लगे, चारों तरफ अंधकार ही अंधकार नजर आये और कोई अपना अपना ना रहें सभी पराये लगने लगे तब आशा की किरण का दामन नहीं छोड़ना चाहिए तथा उम्मीद को मत छोड़िए। क्योंकि जब तक आशा की कोई एक किरण नहीं मिल जाती तब तक जीवन व्यर्थ होता है। आशा में ही वो शक्ति व सामर्थ्य निहित है जो हर खोई हुई चीज को वापस दिला सकती है। मैं तो कहूँगा कि अपने अंतिम समय तक भी अपनी ही जीत की आशा करनी चाहिए। ये जिन्दगी भी उन्हीं का साथ देती है जो हर पल आशा की डोर थामे रहते है। इसलिये हमेशा आशा की किरण रूपी मोमबत्ती को जलाये रखिये, आशा की किरण जलती रहेगी तो आप कुछ भी असम्भव को संभव बना सकते है।
कड़ी मेहनत के बदले जीत का उपहार देती है। समय के तक़ाज़ों को भी कभी-कभी उधार देती है।
है जिसका हौसला तूफां में दरिया पार करने का, उसी के हाथ में ये जिन्दगी आश की पतवार देती है।

धन्यवाद

रामसिया विश्वकर्मा
अतिथि व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर शास. महाविद्यालय पामगढ़
जिला जांजगीर-चाम्पा (छ. ग.)

MATHEMATICAL PUZZLE

12	+		=	36					
		÷		÷				+	
	-		=	4				23	
x		=		=		÷		=	
		6			x	5	=		
=						=			
56		20	-		=	11		3	
		+		x				x	
84	÷		=					13	
		=		=				=	
				63	-		=		

Mrs. Chandni Chhabra Dua
Asst. Prof. (Mathematics)

रामकिशोर की कहानी :- "अंधेरे से उजाले तक"

यह कहानी एक लड़के की है ,जिसने अपनी ज़िन्दगी के सबसे बड़े अभाव "दृष्टिहीनता" को अपनी सबसे बड़ी ताकत बना दिया ।

'शुरुआत : अंधेरे मे जन्मा सपना'

रामकिशोर का जन्म राजस्थान के एक छोटे से गांव मे हुआ । बचपन से हि उसकी आँखो मे रोशनी नही थी।जब बच्चे स्कूल जाते थे ,वह घर के कोने मे बैठा मा के कदमो की आवाज से पहचान करता की कौन आ रहा है।गाव के लोग अक्सर ताने मारते ,अरे ईसे पढ़ा कर क्या करेगा? देख तो सकता नही ,रोटी कैसे कमायेगा?पर उसकी मां ने हार नही मानी। उन्होंने अपने बेटे मे वो रौशनी देखी ,जो आम लोगो की आँखों मे नही होती ।रामकिशोर ने गांव के सरकारी स्कूल मे दाखिला लियाशुरुआत मे शिक्षक भी हिचकिचाए ,पर उसके सवाल पूछने की आदत ने सभी को चौका दिया।वो सुनकर याद करता ,और एक बार सुन लिया तो भूलता नही।धीरे-धिरे पूरे स्कूल मे उसकी बुद्धिमत्ता की चर्चा होने लगी।

"संघर्ष की शुरुआत":-

एक मोड़:- मंच पर पहला भाषन

कक्षा 8 मे स्कूल मे भाषाढ़ प्रतियोगिता हुई। विषय था " हिम्मत-ए-मर्दा तो मदद-ए -खुदा" सबसे आखिर मे रामकिशोर का नाम आया।वो छड़ी के सहारे मंच पर चढ़ा।एक पल सन्नाटा छा गया ।

उसने कहा -

"हाँ मै देख नही सकता ,पर मै महसूस कर सकता हु।,मै रंगो को नही जानता ,पर भावनाए पढ़ सकता हु। ,मै रास्ते नही देखता ,पर मंज़िल पहचानता हु।,और यही मेरी ताकत है।"

तालियो देर तक गुंजती रही। उसी दिन रामकिशोर् को पूरे जिले मे पहचान मिली।सफलता की ओर :-

रामकिशोर ने बाद मे नेशनल स्कूल फॉर द ब्लाइंड मे दाखिला लिया। वहां से ग्रेजुएशन , फिर स्कॉलरशिप पाकर दिल्ली यूनिवर्सटी से मास्टर्स किया।

आज वही रामकिशोर एक प्रेरक वक्ता (Motivational speaker) और NGO चलाने वाले समाजसेवी है जो दृष्टिहिन बच्चों को शिक्षा और सम्मान दिलाने के लिए काम कर रहे है।

सीख :-

"अंधेरे उसे कहते है जो मन मे हो,
आँखों का न देख पाना अंधकार नही,
उम्मीदों का बुझ जाना अंधकार है।"

Anjali Shastri
B.Sc. 2nd year (Maths)

The Pencil and the Eraser

In a little classroom drawer, a pencil and an eraser lay side by side. The pencil was proud and confident, always eager to draw and write, while the eraser was quiet and humble, always cleaning up the pencil's mistakes.

One day, the pencil asked, "Why do you always follow me around, fixing my errors?"

The eraser smiled gently and replied, "Because that's how we learn — by making mistakes and correcting them. Without your marks, I'd have no purpose. And without me, your mistakes would stay forever."

The pencil thought for a moment and then nodded slowly. From that day on, it no longer felt ashamed of its mistakes, knowing the eraser was there — not to judge, but to help.

Lesson: Mistakes are not failures — they're steps toward learning, especially when we're open to correction and growth.

Sahil Tandey
B.Sc. II (Bio)

सात्विक भोजन और भारतीय संस्कृति

सात्विक भोजन भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह शब्द "सात्विक" संस्कृत शब्द "सत्त्व" से आया है, जिसका अर्थ है शुद्धता, संतुलन और सकारात्मकता। सात्विक भोजन वह भोजन है जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धता को बढ़ावा देता है। यह आहार न केवल शरीर को पोषण प्रदान करता है, बल्कि व्यक्ति के मन और आत्मा को भी शांति और संतुलन में बनाए रखता है।

सात्विक भोजन के सिद्धांत

1. शुद्ध और प्राकृतिक: सात्विक आहार में हमेशा ताजे, शुद्ध और प्राकृतिक खाद्य पदार्थों का चयन किया जाता है। इसमें ताजे फल, सब्जियाँ, अनाज, दालें, और सूक्ष्म रूप से तैयार किए गए भोजन शामिल होते हैं। यह भोजन रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से मुक्त होता है।

2. मांसाहारी भोजन का त्याग: सात्विक आहार में मांसाहारी भोजन (मांस, अंडे, आदि) को पूरी तरह से नकारा जाता है। इसके स्थान पर शाकाहारी और पौष्टिक आहार को प्राथमिकता दी जाती है। यह मान्यता है कि मांसाहारी भोजन से हिंसा और पाप का आभास होता है, जो मानसिक शांति को नष्ट कर सकता है।

3. ताजगी और स्वाद: सात्विक भोजन ताजे और प्राकृतिक स्वाद से भरपूर होता है। इसमें मसालों का उपयोग संयमित रूप से किया जाता है और अधिक तैलीय या मिर्च-मसाले वाले भोजनों से बचा जाता है। इसका उद्देश्य शरीर को हल्का और सहज महसूस कराना है।

4. ताजे खाद्य पदार्थों का सेवन: सात्विक भोजन में ताजे फल, सब्जियाँ, और अनाज प्रमुख होते हैं। इनका सेवन शरीर को न केवल पोषण देता है, बल्कि शरीर के ऊर्जा स्तर को भी बनाए रखता है। दूध, दही, घी, शहद, और ताजे फल भी सात्विक आहार का हिस्सा माने जाते हैं।

5. सकारात्मकता का प्रभाव: सात्विक भोजन का एक मानसिक और आत्मिक पहलू भी है। इसे खाने से मन में शांति, संतुलन और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह मानसिक स्पष्टता और आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा देता है।

सात्विक भोजन के फायदे

1. स्वास्थ्य के लिए लाभकारी: सात्विक आहार प्राकृतिक और पौष्टिक होता है, जो शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। इससे पाचन तंत्र मजबूत होता है और शरीर में ऊर्जा का स्तर भी बढ़ता है।

2. मानसिक शांति: सात्विक आहार मानसिक शांति और संतुलन को बढ़ावा देता है। यह तनाव और चिंता को कम करने में मदद करता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है।

3. आध्यात्मिक विकास: सात्विक भोजन आत्मा की शुद्धता के लिए भी लाभकारी है। इसे नियमित रूप से खाने से व्यक्ति की आध्यात्मिक समझ और साधना में वृद्धि होती है।

4. वृद्धि और पुनर्निर्माण: सात्विक भोजन से शरीर में पुनर्निर्माण की प्रक्रिया होती है। यह कोशिकाओं की मरम्मत और वृद्धि में मदद करता है, जिससे शरीर स्वस्थ और ऊर्जावान रहता है।

सात्विक आहार की कुछ प्रमुख विधियाँ

1. पारंपरिक भारतीय आहार: भारत में सात्विक आहार का पालन प्राचीन काल से किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के दाल, चावल, सब्जियाँ, रोटियाँ, और ताजे फल शामिल होते हैं। इनका संयोजन शरीर को सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है।

2. सात्विक स्नैक्स: जैसे कि ताजे फल, मूँगफली, भुने चने, और कम तैलीय पकवान, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं।

3. सात्विक पेय पदार्थ: जैसे ताजे फलों का जूस, नींबू पानी, और शहद के साथ गर्म पानी, जो शरीर को हाइड्रेटेड रखते हैं और पाचन तंत्र को भी मजबूत करते हैं।

निष्कर्ष

सात्विक भोजन का पालन करना केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी अत्यंत लाभकारी है। यह व्यक्ति को न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाता है, बल्कि मानसिक शांति, संतुलन और सकारात्मकता भी प्रदान करता है। इसलिए, हमें अपनी आहार आदतों में सात्विक भोजन को प्राथमिकता देकर जीवन में शांति और संतुलन स्थापित करना चाहिए।

Manish Dubey

B.Sc. III (Maths)

"इंसानियत का दीप जलाओ"

गाँव के कोने-कोने में, जहर पिलाया जाता है,
धर्म के नाम पर भाई को, भाई से लड़वाया जाता है।
कभी मंदिर, कभी मस्जिद, दीवारें खींची जाती हैं,
एक ही धरती माँ की गोदी, फिर क्यों बातें जाति की जाती हैं?

छूने से कोई गंदा हो, ये कैसी सोच पुरानी है?
रोटी और पानी में भी क्या, ऊँच-नीच की कहानी है?
जिसने खेत में पसीना बहाया,
वो कैसे छोटा हो पाया?

संतों ने भी यही सिखाया —
"प्रेम ही ईश्वर, प्रेम ही माया।"
ना कोई छोटा, ना कोई बड़ा,
सबमें बसता एक ही खुदा।

क्यों न आज हम हाथ बढ़ाएं,
घृणा की दीवारें खुद गिराएं?
जाति-धर्म को छोड़ चलें,
इंसान को इंसान कहें।

बना लें गाँव को ऐसा प्यारा,
जहाँ ना हो झगड़ा, ना हो कोई किनारा।
जहाँ दिलों में नफ़रत नहीं,
सिर्फ़ मोहब्बत और उजियारा।

चलो उठो अब, दीप जलाओ,
इंसानियत का गीत सुनाओ।
जिसमें हो केवल प्यार का रंग,
नफरत का ना कोई संग।

निलेश कुमार बर्मन

(बी ए सेकंड सेमेस्टर)

कहानी: "खेल का मैदान सूना है"

पात्र:

1. राहुल – 15 वर्षीय छात्र, टॉपर्स में से एक, पर मोबाइल गेम्स और सोशल मीडिया का दीवाना।

2. दीपक – राहुल का बचपन का दोस्त, जो अब भी हर दिन मैदान में खेलता है।

3. राहुल के पापा – सरकारी नौकरी में व्यस्त, बेटे के बदलते व्यवहार से चिंतित।

कहानी:

एक समय था जब राहुल और दीपक हर शाम क्रिकेट खेलने के लिए कॉलोनी के मैदान में पहुंच जाते थे। बच्चों की चहचहाहट, गेंद की आवाज और खिलखिलाहटें मैदान को जीवंत बनाती थीं।

लेकिन अब वह मैदान सूना है। सिर्फ दीपक अकेला गेंद को बार-बार दीवार से टकराता है। राहुल अब घर में बंद कमरे में मोबाइल गेम्स में उलझा रहता है – सुबह उठते ही स्क्रीन, रात सोने तक स्क्रीन।

राहुल के पापा कई बार बोले,

"बेटा, बाहर जाकर खेलो, आंखें भी थक जाती हैं।"

राहुल हर बार जवाब देता,

"पापा, ये ऑनलाइन गेम भी तो खेल ही है, और मेरे सब दोस्त इसमें हैं!"

धीरे-धीरे राहुल का स्वभाव बदलने लगा – चिड़चिड़ापन, अकेलापन, सिरदर्द, नींद की कमी और पढ़ाई से अरुचि।

एक दिन राहुल स्कूल के स्पोर्ट्स डे में शामिल नहीं हुआ, जबकि पहले वह हर दौड़ और खेल में हिस्सा लेता था।

उसी दिन दीपक ने पुरस्कार जीता और कहा,

"खेलना सिर्फ शारीरिक नहीं, मानसिक ताकत भी देता है – जो स्क्रीन से नहीं मिलती।"

शाम को दीपक ने राहुल को मैदान में खींचकर लाया और कहा,

"चल एक ओवर खेलते हैं, सिर्फ एक ओवर।"

पहले तो राहुल ने मना किया, लेकिन जब उसने पहली बार बल्ला पकड़ा, गेंद पर प्रहार किया – तो कुछ पल के लिए मुस्कुरा उठा।

उसी रात राहुल ने मोबाइल की सेटिंग्स में टाइम लिमिट लगाई, और अगले दिन खुद खेलने गया।

सीख:

मोबाइल और तकनीक बुरी नहीं, लेकिन जब वह हमें हमारी असली दुनिया से काटने लगे, तब सोचने का समय आ जाता है।

खेल सिर्फ मनोरंजन नहीं, हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का आधार हैं। वर्तमान पीढ़ी को चाहिए कि वह संतुलन बनाए – वर्चुअल गेम्स और असली खेलों के बीच।

--- निलेश कुमार बर्मन

(बी .ए.द्वितीय सेमेस्टर)

कर्म और भाग्य

एक चाट वाला था। जब भी उसके पास चाट खाने जाओ तो ऐसा लगता कि वह हमारा ही रास्ता देख रहा हो। हर विषय पर उसको बात करने में उसे बड़ा मज़ा आता था। कई बार उसे कहा कि भाई देर हो जाती है, जल्दी चाट लगा दिया करो पर उसकी बात ख़त्म ही नहीं होती। एक दिन अचानक उसके साथ मेरी कर्म और भाग्य पर बात शुरू हो गई।

तक़दीर और तदबीर की बात सुन मैंने सोचा कि चलो आज उसकी फ़िलासॉफ़ी देख ही लेते हैं। मैंने उससे एक सवाल पूछ लिया। मेरा सवाल उस चाट वाले से था कि आदमी मेहनत से आगे बढ़ता है या भाग्य से?

उसने जो जवाब दिया उसका जबाब को सुन कर मेरे दिमाग़ के सारे जालें ही साफ़ हो गए। वो चाट वाला मेरे से कहने लगा आपका किसी बैंक में लॉकर तो होगा.?

मैंने कहा हाँ, तो उस चाट वाले ने मेरे से कहा कि उस लॉकर की चाबियाँ ही इस सवाल का जवाब है। हर लॉकर की दो चाबियाँ होती हैं। एक आप के पास होती है और एक मैनेजर के पास। आप के पास जो चाबी है वह है परिश्रम और मैनेजर के पास वाली भाग्य।

जब तक दोनों चाबियाँ नहीं लगतीं लॉकर का ताला नहीं खुल सकता। आप कर्मयोगी पुरुष हैं और मैनेजर भगवान! आपको अपनी चाबी भी लगाते रहना चाहिये। पता नहीं ऊपर वाला कब अपनी चाभी लगा दे। कहीं ऐसा न हो कि भगवान अपनी भाग्यवाली चाबी लगा रहा हो और हम परिश्रम वाली चाबी न लगा पायें और ताला खुलने से रह जाये।

शिक्षा:-
कर्म करते रहिए, भाग्य भरोसे रहकर अपने लक्ष्य से दूर मत होइए।

सदैव प्रसन्न रहिये - जो प्राप्त है, पर्याप्त है।
जिसका मन मस्त है - उसके पास समस्त है।।

Anju Sahu
B. Sc. II (Bio)

दु पल के तोर प्रान हवय

दु पल के तोर प्रान हवय,
त काबर अतका गुमान हवय,,
करम बने सब राखो रे भाई,
सब ल देखत भगवान हवय।।
जानत हव मै ये दुनिया म,
पद पैसा ले पहचान हवय।।
रहीबे कतकों तै गुणवान,
चाहे कतकों ज्ञानवान।।
निर्धन मनखे मन कखरो बर,
नई रहय कौड़ी घलों समान।।
पैसा म अंधरा इंसान हवय,
मानवता ले अनजान हवय।।
मानव मानव कहिथन जेला,
मानव रूप शैतान हवय।।
जीवन म जतका कमाना हे,
सब ल एक दिन गवाना हे।।
हीरा बरोबर ये जीवन ल,
बिरथा नई गवाना हे।।
मानव रूप म जनम धरे हन त,
सही मानव बन के जाना हे।।

Durgesh Kumar Sahu
Class –B.A. Iind Semester

संघर्ष

एक युवक जीवन में संघर्ष करते - करते थक गया , उसे धन कमाने के लिए कोई भी काम नही मिल पा रहा था। ऐसे में वह निराश हो गया । और आत्म हत्या करने के लिए एक जंगल में चला गया । वहा उसे एक संत मिले । संत ने उससे पूछा कि तुम अकेले यहां क्या कर रहे हो ?

युवक ने अपनी सभी समस्याएं संत को बता दी । तब संत ने कहा की तुम्हे कोई काम जरूर मिल जायेगा । इस तरह निराश नहीं होना चाहिए ।व्यक्ति ने कहा कि मैं हिम्मत हार चुका हूं । मुझसे अब कुछ नहीं होगा । संत उसे कहा की मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूं । उससे तुम्हारी निराशा दूर हो जाएगी । कहानी ये है कि एक छोटे बच्चे ने एक बास का और एक कैक्टस का पौधा लगाया। बच्चा रोज दोनो पौधा की देख भाल करता । एक साल बीत गया । कैक्टस का पौधा तो पनप गया , लेकिन बास का पौधा वैसा का वैसा था । बच्चे ने हिम्मत नही हारी और वह दोनो की देखभाल करता रहा ।

इस तरह कुछ महीने और निकल गए , लेकिन बास का पौधा वैसा का वैसा था। बच्चा निराश नहीं हुआ और उसने देखभाल जारी रखी। कुछ महीनो के बाद बास का पौधा भी पनप गया और कुछ ही दिनो मे कैक्टस के पौधे से भी बड़ा हो गया । दरअसल बास का पौधा पहले अपने जड़े मजबूत कर रहा था, इसीलिए उसे पनपने में थोड़ा समय लगा ।

संत ने उस व्यक्ति से कहा की हमारे जीवन में जब भी संघर्ष आए तो हमे हमारे जड़े मजबूत करना चाहिए , निराश नहीं होना चाहिए । जैसे ही हमारे जड़े मजबूत होगी , हम तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बड़ने लगेगे । तब तक धैर्य रखना चाहिए । वह युवक संत की बात समझ गया और उसने आत्म हत्या करने का विचार त्याग दिया।

कथा की सीख :- हमारे जीवन में जब भी बुरा समय आए तो उसका सही उपयोग करना चाहिए । बुरे दिनो में हमारी जड़े मजबूत करनी चाहिए यानी अपनी योग्यताओं को निखारना चाहिए , हमारी कमियों को दूर करना चाहिए । जब हमारी कमियां दूर हो जाएगी तो योग्यता निखरने लगेगी और हम सफलता हासिल कर पाएंगे।

Pushpendra Kashyap
B.Sc. III Maths

मन की शक्ति

अचेतन मन की शक्ति एक आकर्षक और शक्तिशाली विषय है जो हमारे जीवन को गहराई से प्रभावित कर सकता है। अचेतन मन हमारे अवचेतन विचारों, भावनाओं, और आदतों को नियंत्रित करता है, जो हमारे जागरूक विचारों से परे होते हैं।

अचेतन मन की शक्ति के कुछ पहलू:

1. *विचारों और भावनाओं का नियंत्रण*: अचेतन मन हमारे विचारों और भावनाओं को प्रभावित कर सकता है, जो हमारे व्यवहार और निर्णयों को आकार देते हैं।

2. *आदतों का निर्माण*: अचेतन मन हमारी आदतों को नियंत्रित करता है, जो हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

3. *निर्णय लेने में भूमिका*: अचेतन मन हमारे निर्णय लेने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, अक्सर हमें इसका एहसास भी नहीं होता।

4. *रचनात्मकता और प्रेरणा*: अचेतन मन रचनात्मकता और प्रेरणा का स्रोत हो सकता है, जो हमें नए विचारों और समाधानों की ओर ले जा सकता है।

अचेतन मन की शक्ति का उपयोग करने के तरीके:

1. *ध्यान और आत्म-चिंतन*: ध्यान और आत्म-चिंतन के माध्यम से हम अपने अचेतन मन को समझने और प्रभावित करने का प्रयास कर सकते हैं।

2. *सकारात्मक आत्म-बात*: सकारात्मक आत्म-बात के माध्यम से हम अपने अचेतन मन को सकारात्मक विचारों और भावनाओं से भर सकते हैं।

3. *आदतों का परिवर्तन*: अपनी आदतों को बदलने के लिए हम अपने अचेतन मन को पुनः प्रोग्राम कर सकते हैं।

4. *रचनात्मकता को बढ़ावा देना*: अपने अचेतन मन को रचनात्मकता और प्रेरणा के लिए खोलने से हम नए विचारों और समाधानों की खोज कर सकते हैं।

अचेतन मन की शक्ति को समझना और उसका उपयोग करना हमारे जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है, जिससे हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने में सक्षम हो सकते हैं।

Anju Sahu
B.Sc. II (Bio)

मदद

एक प्रेरक कहानी है एक गाँव में रहने वाले गरीब लकड़हारे की, जिसे एक संत ने सिखाया कि दूसरों की मदद करने से ही असली खुशी मिलती है।

एक गाँव में एक गरीब लकड़हारा रहता था। वह जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाता और उन्हें बेचकर अपना पेट भरता था। एक दिन, वह एक संत से मिला। संत ने उसे बताया कि भगवान उसे थोड़ा-थोड़ा अनाज इसलिए दे रहे हैं ताकि उसे जीवन भर खाने को मिलता रहे।

कुछ दिन बाद, लकड़हारा संत के पास वापस आया और कहा कि वह एक दिन पेट भरकर खाना चाहता है, इसलिए भगवान से कहे कि उसे उसकी किस्मत का सारा अनाज एक साथ दे दे। संत ने उसकी बात मान ली और प्रार्थना की। अगले दिन, लकड़हारे के घर पाँच बोरी अनाज आ गया। उसने सोचा कि संत की प्रार्थना से भगवान ने उसे इतना अनाज दिया है। उसने खाना खाया और गाँव के गरीबों को भी खाना खिलाया।

अगले दिन भी पाँच बोरी अनाज आया। उसने फिर वही किया। काफी दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन, वह संत के पास गया और पूरी बात बता दी। संत ने उसे समझाया कि भगवान उसके नेक काम से बहुत प्रसन्न हैं, इसलिए वह उसे दूसरों की किस्मत का अनाज भी दे रहे हैं ताकि वह उन्हें खाना खिला सके।

लकड़हारा समझ गया कि दूसरों की मदद करने से ही असली खुशी मिलती है। उसने दूसरों को खाना खिलाना जारी रखा।

सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए, क्योंकि इससे न केवल दूसरों का भला होता है, बल्कि हमारा अपना जीवन भी खुशहाल बनता है

Sahil Tandey

झूठ का सच

एक रात चार कॉलेज के बच्चे देर तक बाहर रहे, पार्टी कर रहे थे और मौज-मस्ती कर रहे थे। उन्होंने अगले दिन के लिए निर्धारित परीक्षा पर ध्यान नहीं दिया और पढ़ाई नहीं की। सुबह, उन्होंने परीक्षा देने से बचने की योजना बनाई। उन्होंने खुद को तेल और गंदगी से ढक लिया और डीन के कार्यालय में चले गए। वहां पहुंचने पर, उन्होंने बताया कि वे पिछली रात एक शादी में गए थे और वापस आते समय उनकी कार का टायर पंचर हो गया और उन्हें कार को धक्का देकर कैंपस वापस लाना पड़ा।

डीन ने उनकी दुख भरी कहानी सुनी और सोचा। उसने उन्हें तीन दिन बाद फिर से परीक्षा देने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने उसका धन्यवाद किया और उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

जब परीक्षा का दिन आया, तो वे डीन के पास गए। डीन ने उन सभी को परीक्षा के लिए अलग-अलग कमरों में बिठाया। वे इससे सहमत थे क्योंकि उन्होंने कड़ी मेहनत से पढ़ाई की थी। फिर उन्होंने परीक्षा देखी। उसमें 2 प्रश्न थे।

1) आपका नाम ___________ (1 अंक)

2) कौन सा टायर फटा? ___________ (99 अंक)
विकल्प – (ए) आगे का बायाँ (बी) आगे का दायाँ (सी) पीछे का बायाँ (डी) पीछे का दायाँ

सबक: हमेशा जिम्मेदार बनें और समझदारी से निर्णय लें।

Sveta Manhar

चींटी और टिड्डा

एक बार की बात है, एक मेहनती चींटी और एक लापरवाह टिड्डा था। चींटी हर दिन भोजन इकट्ठा करने और सर्दियों की तैयारी करने में बिताती थी, जबकि टिड्डा अपना दिन धूप में गाते और नाचते हुए बिताता था। चींटी ने टिड्डे को सर्दियों की तैयारी करने की चेतावनी दी, लेकिन टिड्डे ने उसकी बात नहीं मानी। उसे लगा कि उसके पास अपनी लापरवाह ज़िंदगी का मज़ा लेने के लिए दुनिया का सारा समय है।

जैसे-जैसे सर्दी का मौसम करीब आता गया, टिड्डे को ठंड और भूख का एहसास होने लगा। उसे एहसास हुआ कि उसने चींटी की बात न मानकर बहुत बड़ी गलती की है। वह कांपता हुआ और कमज़ोर होता हुआ चींटी के घर गया और सर्दी से बचने के लिए कुछ खाने की भीख माँगी। चींटी ने, जिसने पहले से ही कड़ी मेहनत की थी और योजना बनाई थी, उसके पास बाँटने के लिए बहुत सारा खाना था। उसने टिड्डे को कुछ खाना दिया और उसे एक मूल्यवान सबक सिखाया।

चींटी की सलाह न मानने के कारण टिड्डा पछतावे और शर्म से भर गया। उसे कठिन तरीके से सीखना पड़ा कि टालमटोल और आलस्य के परिणाम होते हैं। उसे एहसास हुआ कि उसे मौज-मस्ती में लिप्त होने और अपना समय बर्बाद करने के बजाय कड़ी मेहनत करनी चाहिए थी और भविष्य के लिए योजना बनानी चाहिए थी।

#छात्रों के लिए इस प्रेरक कहानी की शिक्षा

यह कहानी हमें याद दिलाती है कि हमें चीजों को हल्के में नहीं लेना चाहिए और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। हमें भविष्य के लिए योजना बनानी चाहिए और तैयारी करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे चींटी ने की थी। आलस्य और टालमटोल से पछतावे और छूटे हुए अवसर मिल सकते हैं, जैसा कि टिड्डे ने अनुभव किया था। तो, आइए हम इस कहानी से सीखें और मेहनती और अनुशासित व्यक्ति बनने का प्रयास करें जो आगे की योजना बनाते हैं और अपने संसाधनों और अवसरों का अधिकतम लाभ उठाते हैं।

Sveta Manhar

आकाश में बादल

आकाश में बादल भटक रहा है, किसान उसे देखकर **हँस** रहा है ||

आकाश में बादल भटक रहा है, किसान उसे देखकर **हँस** रहा है ||

न जाने कितने समय से प्यासी है ये धरती, न जाने कितने समय से प्यासी है ये धरती ||

यह कहकर किसान आकाश से बात कर रहा है, ये बादल तू इतना बरस कि सागर महासागर छलक जाए, ये बादल तू इतना बरस कि सागर महासागर छलक जाए ||

साथ ही साथ किसान की धान की बालियाँ भी लहरा जाए, यह कहकर किसान आकाश का धन्यवाद करता है ||

पकड़े **हाथ** में हल, रख कंधे पर हल, करे बिन भोजन पानी भोर सवेरे किसान निकलता है |

पकड़े **हाथ** में हल, रख कंधे पर हल, करे बिन भोजन पानी भोर सवेरे किसान निकलता है ||

खेत में पहुँच कर किसान धरती माँ को प्रणाम करता है, फिर एक सुबह किसान नए उमंग के साथ नई जिंदगी की शुरुआत **करता** है ||

Rupesh

B.A. I Semester

"सर्वं खल्विदं ब्रम्ह"

वेद(प्रमुख सनातन हिन्दू ग्रन्थ) में लिखा है , "सर्वं खल्विदं ब्रम्ह" अर्थात् सबमें भगवान हैं।

Let me proof that, how can we say God is present in all beings?

सभी जीव(ब्रह्माण्ड के सभी जीव , जंतु, सिंगल सेल) सभी में common बात है, कि सभी जीवित रहना चाहते हैं। सभी में चेतना है तथा सभी आनंद से सुख में रहना चाहते हैं।

All in all -

1) "सत्" है अर्थात existance है।

2) "चित" है अर्थात awareness है।

3) और "आनंद" अर्थात सुख से रहना चाहते हैं।

सच्चिदानंद परमपुरुष, अखिल कोटि ब्रह्माण्डनायक परम् आनंद सिंधु ,"कर्तुम अकर्तुम अन्यथाकर्तुम" सर्वसमर्थ भगवान् श्री कृष्ण हैं।🙏

Proved 🙂

Manish Dubey
B.Sc. III (Bio)

राष्ट्रीय सेवा योजना :मेरी उपलब्धि एवं अनुभव

न चोरहार्य न राजहार्य न भ्रतृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धति एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।

सात दिवसीय राज्य स्तरीय शिविर
21/03/2025 से 27/03/2025 तक

छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ द्वारा प्रायोजित
राज्य स्तरीय सात दिवसीय शिविर 2024-25 में दिनांक 21 मार्च 2025 से 27 मार्च 2025 तक "डिजिटल साक्षरता एवं नशा मुक्ति समाज के लिए युवा "थीम पर आधारित

स्वामी आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी माध्यम आदर्श महाविद्यालय छात्रावास, केशवपुर

जिला - अंबिकापुर छत्तीसगढ़ में संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा (छ.ग.) राष्ट्रीय योजना प्रकोष्ठ की संगठन व्यवस्था में आयोजित सात दिवसीय राज्य स्तरीय शिविर में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित किया। मेरा राज्य स्तरीय शिविर में चयन के लिए आदरणीय डॉ. एस. आर. महेंद्र सर कार्यक्रम अधिकारी (रा.से.यो.) डॉ. भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय पामगढ़ का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने महाविद्यालय स्तर पर राष्ट्रीय सेवा योजना में मेरा सक्रिय सेवा भाव को देखते हुए मेरा चयन किया एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।
राज्य स्तरीय शिविर जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य के पूरे 33 जिलों के 11 विश्वविद्यालयों से 327 स्वयंसेवक ,कार्यक्रम अधिकारीयो ने शिविर में सहभागिता किया ।

शिविर में मुझे प्रातः जागरण एवं योगाभ्यास से लेकर रात्रि कालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका करने का गहरा अनुभव प्राप्त हुआ।

शिविर में जाने के लिए सर्वप्रथम मुझे असहज महसूस हुआ की कैसे अपने क्षेत्र से दूर अन्य जिलों में सबके बीच जाऊंगा कैसे वहा रहूंगा,लेकिन शिविर के दूसरे ही दिन मुझे कई स्वयंसेवकों से अच्छी दोस्ती हो गया।

शिविर का संचालन बढ़ते गया इसमें प्रत्येक दिन परियोजना कार्य में कैंपस की साफ– सफाई, पश्चात दोपहर की बौद्धिक परिचर्चा में कई बुद्धिजीवों को सुनने एवं उनसे जीवन संघर्ष के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हुआ,जो सदैव मेरे लिए प्रेरणादायक रहेगा।

बौद्धिक परिचर्चा में डॉ.शारदा प्रसाद त्रिपाठी जी कुलसचिव (संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा (छ.ग.)के व्यक्तित्व से रूबरू होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो विशेष रूप से पानी को बचाने के संघर्ष में व्याख्यान दिए एवं हमें प्रेरित किया।

परिचर्चा के मुख्य वक्ताओं में

श्री विश्व विजय सिंह तोमर
अध्यक्ष –छत्तीसगढ़ युवा आयोग के वक्तव्य सुनने
का अवसर प्राप्त हुआ
जिन्होंने छत्तीसगढ़ के समस्त युवाओं को राष्ट्र के लिए समर्पित भाव से न्यौछावर होने एवं राष्ट्र विकास युवाओं का योगदान के लिए प्रेरित किया।

शिविर का मेरा अनुभव बहुत ही यादगार रहा। आने वाले समय में यदि महाविद्यालय के किसी भी छात्र-छात्राओं को राज्यस्तरीय शिविर जाने का अवसर प्राप्त होता है, तो वह जरूर उसमें सहभागिता करें एवं विभिन्न कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले। मेरे लिए यह शिविर हमेशा प्रेरणादायक रहेगा।

में पुनः महाविद्यालय प्राचार्य –डॉ. एस. के. यादव
डॉ. एस. के. त्रिपाठी (अंग्रेजी),
डॉ.एस.आर.महेन्द्र (कार्यक्रम अधिकारी–रा.से.यो.)
डॉ. तारणीश गौतम (हिन्दी), डॉ. आशीष तिवारी (रसायन शास्त्र), डॉ. स्वेता जैन (समाजशास्त्र), प्रो. मीरा टंडन (वाणिज्य) श्री आर. एस. विश्वकर्मा
समस्त सम्माननीय प्रध्यापकगढ एव स्वयं सेवकों का आत्मीय आभार।

सोमेश कुमार
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (राजनीति विज्ञान)
राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय पामगढ़ जिला- जांजगीर
चांपा (छ.ग.)

धैर्य और त्याग

यह प्रसंग है रामायण काल की जब भगवान श्री राम माता सीता और भईया लक्ष्मण चौदह वर्षों के वनवास के लिए गए थे।

- जब माता सीता का हरण लंकापति रावण द्वारा कर लिया गया था तब उनकी खोज करते हुए समुद्र के किनारे पहुंचे। किन्तु उनको आगे बढ़ने के लिए समुद्र पार करना था जो कि असंभव सा था। भगवान राम चाहते तो अपने एक तीर से समुद्र को सूखा कर पार कर सकते थे, किंतु ऐसा न कर उन्होंने धैर्यता से समुद्रदेव की स्तुति किया। बाद में समुद्रदेव ने सेतु निर्माण में पूर्ण सहयोग दिया।

- जिस समय अयोध्या में भगवान राम का राज्याभिषेक की तैयारी किया जा रहा था। तब राजा दशरथ व्दार दिए गए वचन को पूर्ण करने के लिये राजपाट का त्यागकर चौदह वर्षों के लिए वनवास पर चले गए।

नागेश्वर प्रसाद साहू
M.A IV semester political science

Art Gallery

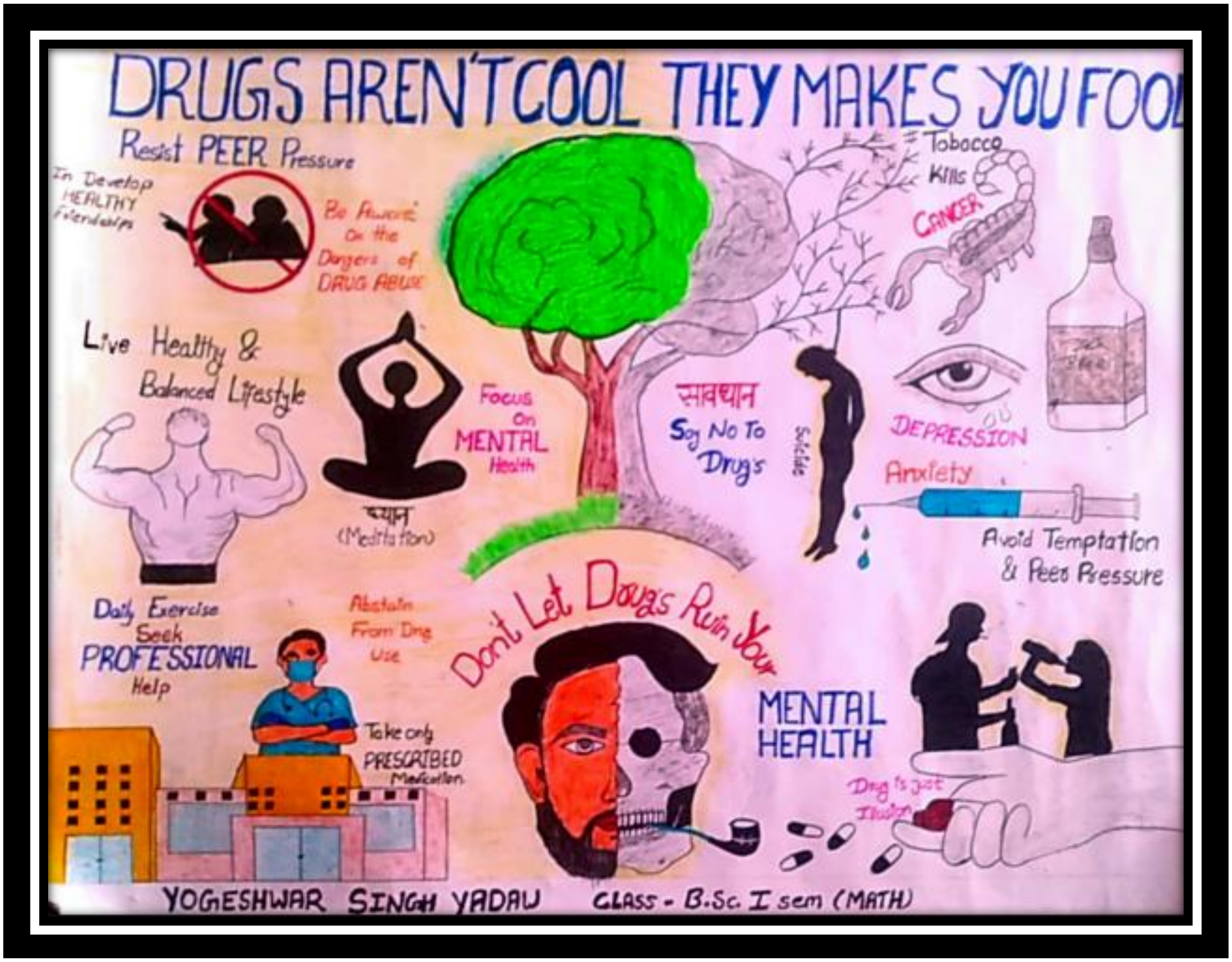

Yogeshwar Singh Yadav
B. Sc. I (Maths)

Sandhaya Tamrakar
B.Sc. III (Bio)

Jussi Baghel
B Com II

Name : Surbhi Yadav
Class : B.com second semester

Name : Surbhi Yadav
Class : B.com second semester

Satyam Khare
B. A. III

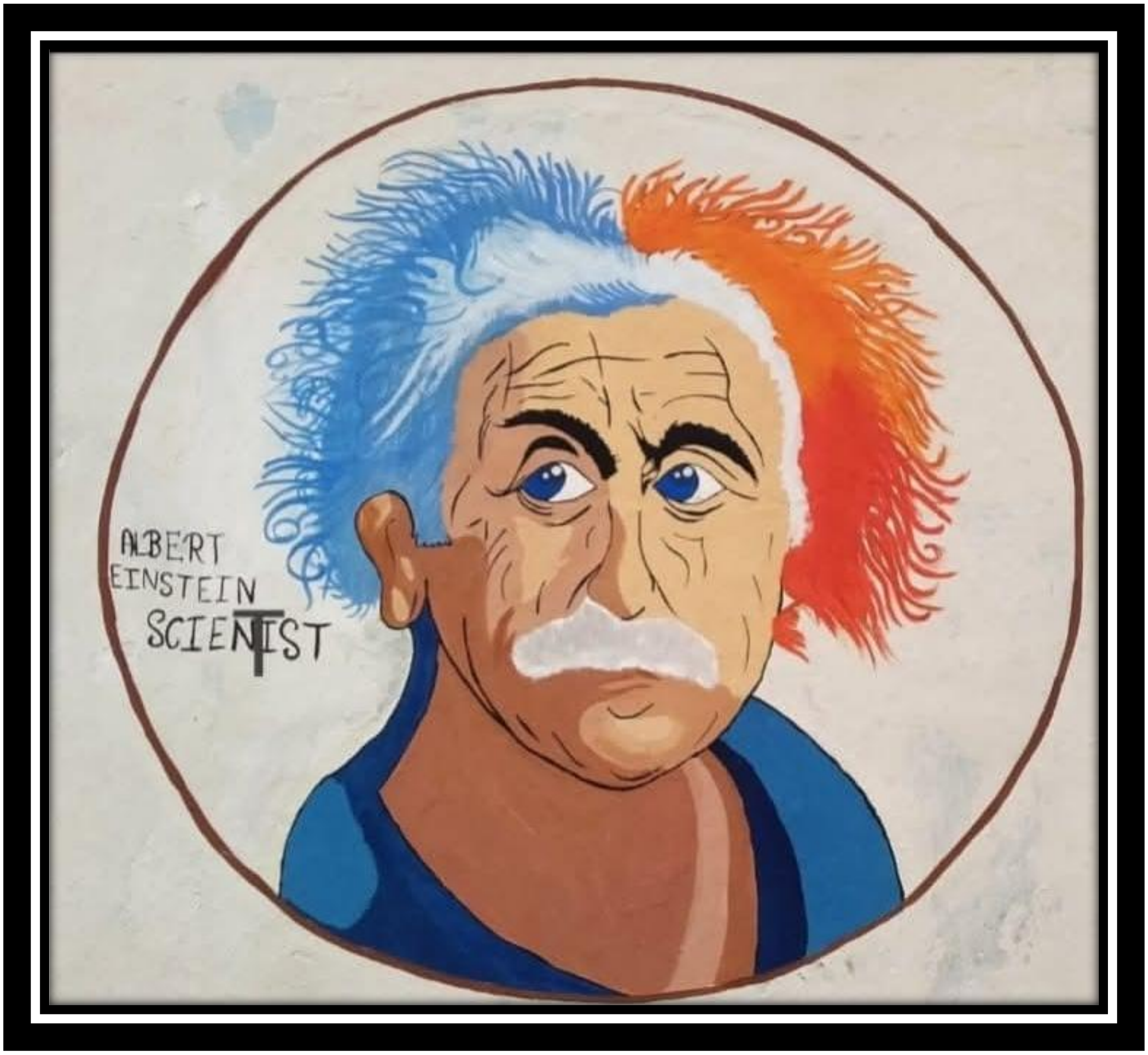

Chhaya Norge

B. Sc. III (Bio)

Chhaya Norge

B. Sc. III (Bio)

Chhaya Norge

B. Sc. III (Bio)